मनोविज्ञान के अन्य सम्प्रदायों के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान का योगदान एक सम्प्रदाय के रूप में भी काफी महत्त्वपूर्ण रहा है। इस स्कूल द्वारा अन्य सम्प्रदायों के समान विभिन्न पहलुओं पर स्पष्ट विचार व्यक्त किये गए हैं जिनका यहाँ वर्णन अपेक्षित है। एक सम्प्रदाय (system) के रूप में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के मुख्य योगदान को निम्नांकित छह प्रमुख भागों में बाँटकर अध्ययन किया जा सकता है।

1. मनोविज्ञान की परिभाषा एवं विधियाँ *(Definition and Methods of Psychology)*—आरंभिक गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों जैसे—कोहलर, कौफ्का तथा वर्दाइमर का मत था कि मनोविज्ञान तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) का अध्ययन करता है जिसमें मूल रूप से स्मृति, चिन्तन, प्रत्यक्षण एवं सीखना जैसे कार्यों का अध्ययन किया जाता है। वे इसको शुरूआत प्रत्यक्षण के अध्ययन से किए और बाद में अन्य क्षेत्रों का भी अध्ययन किए। परन्तु उत्तरकालीन गेस्टाल्टवादी (later Gestaltist) जैसे कर्ट लेविन (Kurt Lewin) ने इस बात पर बल डाला कि व्यवहार को भी मनोविज्ञान के अध्ययन-विषय के रूप में सम्मिलित किया जाना चाहिए। उन्होंने कई अध्ययन किये जिसमें व्यवहार का सम्बन्ध प्रत्यक्षण से जोड़ने की कोशिश की गयी। वर्तमान स्थिति यह है कि गेस्टाल्टवादियों के अनुसार मनोविज्ञान प्राणी के व्यवहार तथा तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) दोनों का ही अध्ययन करता है। इन लोगों ने प्रयोग तथा अन्तर्निरीक्षण (introspection) को मनोविज्ञान के उत्तम विधि बतलाये। लेकिन इन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि यह आत्मनिरीक्षण विधि संरचनावादियों के प्रशिक्षित आत्मनिरीक्षकों (trained introspectonist) की विधि से भिन्न है।

2. अभिगृहीत *(Postulates)*—व्यवहारवाद के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान ने भी अपने विचारों के स्पष्टीकरण के लिए कुछ अभिगृहीत (postulates) का प्रतिपादन किया है। ऐसे अभिगृहीत के दो मुख्य प्रकार बतलाये गए हैं—प्राथमिक (primary) तथा द्वितीयक (secondary)। गेस्टाल्ट मनोविज्ञानियों का समग्र-अंश मनोविज्ञान (whole-part psychology) एक प्राथमिक अभिगृहीत का उदाहरण है। इसके अनुसार समग्रता (whole) के प्रत्यक्षण उसके अंश के प्रत्यक्षण का योग नहीं होता है। समग्रता की विशेषताएँ (characteristics) अंश की विशेषताओं से भिन्न होती है। समकृतिकता के नियम (Principle of isomorphism), प्रत्यक्षणात्मक संगठन के नियम (Principle of perceptual organization), सीखने के बारे में असांतत्यता विचार (uncontinuity view of learning) कुछ महत्त्वपूर्ण द्वितीयक अभिगृहीत (secondary postulates) के उदाहरण है। इन नियमों की चर्चा पहले की जा चुकी है। सीखने के बारे में असांतत्यता विचार के माध्यम से गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने यह स्पष्ट किया कि सीखने की प्रक्रिया में अचानक असांतत्य वृद्धि (sudden discontinuous increments) होती है जिसका आधार सूझ (insight) होता है।

3. मन-शरीर समस्या *(Mind-body Problem)*—गेस्टाल्टवादियों के अनुसार मन-शरीर समस्या का आदर्श समाधान समकृतिकता का नियम (principle of isomorphism) है। यह नियम निश्चित रूप से एक समानान्तरवाद (parallelism) को बतलाता है परन्तु यह समानान्तरवाद वुण्ट तथा टिचेनर (Titchener) के समानान्तरवाद से भिन्न था। गेस्टाल्टवादियों के लिए यह एक मनोशारीरिक समानान्तरवाद (psychophysical parallelism) था क्योंकि उसमें प्रत्यक्षित क्षेत्र (perceived field) या मानसिक क्षेत्र (mental field) तथा मस्तिष्कीय क्षेत्र (brain field) में बिन्दु से बिन्दु का सम्बन्ध था जबकि संरचनावादियों के लिए इन दोनों के बीच मनोदैहिक समानान्तरवाद (psychophysical parallelism) था क्योंकि इसमें मानसिक घटना (mental events) तथा दैहिक घटना (physical events) में बिन्दु से

Scanned with CamScanner

बिन्दु का सम्बन्ध होता है। इन दोनों क्षेत्रों के अलावा एक और क्षेत्र जिसे भौतिक क्षेत्र (physical field) या भौगोलिक क्षेत्र (geographical field) जो प्रत्यक्षित क्षेत्र या मानसिक क्षेत्र (mental field) से नहीं मिल सकता है जैसा कि हम विभिन्न तरह के भ्रम के प्रकार में देखते पाते हैं, भी होता है।

4. आंकड़ों की प्रकृति (*Nature of data*)—तात्कालिक अविश्लेषित अनुभव से प्राप्त आँकड़े ही गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के लिए प्रमुख आँकड़े थे। गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों ने इस तरह के आँकड़े को 'प्रदत्त' (given) कहा है। प्रत्यक्षण के अध्ययन में 'प्रदत्त' का प्रयोग काफी होता है। वे तात्कालिक अविश्लेषित अनुभूति के आधारों पर प्राप्त आँकड़ों को स्वीकार कर गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिकों द्वारा संरचनावादियों (structuralists) से काफी सादृश्यता दिखलायी है। परन्तु फिर भी गेस्टाल्ट मनोविज्ञानी संरचनावादी से इस अर्थ में भिन्न थे कि उन्हें संरचनावादियों द्वारा की गयी व्याख्या पसंद नहीं थी।

गेस्टाल्टवादियों ने सीखने तथा समस्या समाधान के क्षेत्र में व्यवहारात्मक आँकड़ों को भी स्वीकार किया है। इस तरह से गेस्टाल्ट मनोविज्ञानियों द्वारा व्यवहारवाद के मनोविज्ञान को काफी तक स्वीकार किया गया है। इस बिन्दु पर तब यह कहा जाता है कि गेस्टाल्ट मनोविज्ञानी संरचनावाद की तुलना में व्यवहारवाद के मनोविज्ञान को अधिक बर्दाश्त किये। इनके बावजूद गेस्टाल्ट मनोविज्ञान व्यवहारवादियों से इस अर्थ में भिन्न थे कि वे लोग व्यवहार का अध्ययन करके उसे मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों (psychological fields) से न कि केवल पर्यावरणी कारकों (environmental factors) से सम्बन्धित करना चाहते थे।

5. चयन का नियम (*Principle of selection*)—गेस्टाल्टवादियों ने *प्रत्यक्षज्ञानात्मक* संगठन (perceptual organization) के विभिन्न नियमों का प्रतिपादन किया जिसके सहारे इस बात की व्याख्या होती है कि किसी विशेष आकृति (figure) के प्रकार को प्रत्यक्षण के लिए व्यक्ति चयन करता है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि प्रत्यक्षण के क्षेत्र में सभी अंशों (parts) की भूमिका होती है। अतः उनके लिए यह जानना अधिक महत्त्वपूर्ण है कि ये सारे अंश किस तरह से संगठित (organized) या संगठन (organization) के लिए चयनित होते हैं। व्यक्ति क्यों क्षेत्र के कुछ अंश को आकृति (figure) के रूप में तथा क्यों क्षेत्र के कुछ अंश को पृष्ठभूमि (background) के रूप में प्रत्यक्षण करता है? रूबिन (Rubin) जो गेस्टाल्ट मनोविज्ञान के प्रमुख समर्थक हैं, ने कुछ ऐसे नियमों (principles) का प्रतिपादन किया है जिसके सहारे *प्रत्यक्षज्ञानात्मक* समग्रता (perceptual whole) के कुछ अंश को व्यक्ति आकृति (figure) के रूप में तथा कुछ अंश को वह पृष्ठभूमि (background) के रूप में प्रत्यक्षण करता है। एक ऐसे ही प्रमुख नियम के अनुसार जो अंश या भाग को व्यक्ति स्पष्ट रूप से प्रत्यक्षण करता है, उसे आकृति (figure) समझा जाता है तथा जिस भाग को अस्पष्ट प्रत्यक्षण व्यक्ति करता है, उसे पृष्ठभूमि (background) समझा जाता है। बाद में गिब्सन (Gibson, 1966) ने उद्दीपकों के कुछ ऐसी विशेषताओं का उल्लेख किया है जिससे चयन अधिक आसान हो जाता है।

6. सम्बन्ध का नियम (*Principles of Connection*)—गेस्टाल्टवादियों के लिए सम्बन्ध (connecton) की समस्या का स्वरूप कुछ वैसा नहीं था जैसा कि साहचर्यवादियों तथा संरचनावादियों के लिए था। संरचनावादियों के लिए चेतन के तत्त्व साहचर्य के विभिन्न नियमों (various laws) द्वारा सम्बन्धित होते हैं। इसे गेस्टाल्टवादियों ने *बण्डल प्राक्कल्पना* (bundle hypothesis) कहा है जिसे इन लोगों ने अस्वीकृत कर दिया है क्योंकि इन लोगों का मत था कि समग्रता का प्रत्यक्षण उसके अंशों के प्रत्यक्षण का योग (sum) नहीं होता है। इसलिए उसके अंशों को जोड़कर समग्रता का निर्णय करने का प्रत्यक्षण करना एक बेकार एवं अर्थहीन प्रयास है। गेस्टाल्टवादियों का मत है कि यदि बण्डल प्राक्कल्पना को सही मान लिया जाता है तो प्रत्यक्षण को साधारण एवं आरंभिक प्रत्यक्षणों का मात्र एक योग माना जाएगा जो वह वास्तव में नहीं है। गेस्टाल्टवादियों ने यह भी स्पष्ट किया कि *प्रत्यक्षज्ञानात्मक* संगठन के नियम को सम्बन्ध का नियम कहना अनुचित होगा क्योंकि इन नियमों से यह पता चलता है कि किस तरह से एक विशेष संरचना (structure) की उत्पत्ति होती है न कि यह पता चलता है कि अमुक संरचना की उत्पत्ति में कौन-सा तत्त्व सम्बन्धित होंगे। यह कहना न होगा कि अन्य सम्प्रदायों के समान गेस्टाल्ट मनोविज्ञान भी तात्कालिक अनुभूति (immediate experience) तथा व्यवहार के पूर्ववर्त्ती (antecedents) तथा परवर्त्ती (consequents) कारकों पर अधिक बल डाले हैं।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि एक सम्प्रदाय के रूप में गेस्टाल्ट मनोविज्ञान अन्य सम्प्रदायों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं था। इसके विभिन्न अभिगृहीत (postulates) अभी भी आधुनिक शोध एवं प्रयोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रेरणा स्रोत है।

Scanned with CamScanner